ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class VIII

Subject- Hindi Second Language

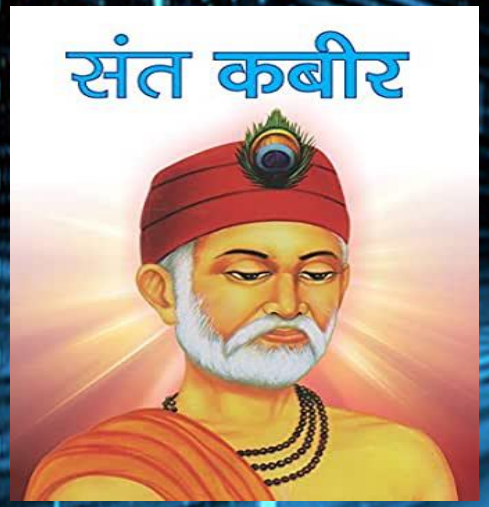

Topic-

कबीर की साखियाँ

By- Ramkewal Yadav

©ISWK

कबीर की साखियाँ

पाठ का सार

इन दोहों में कबीर मानवीय प्रवृत्तियों को प्रस्तुत करते हैं।

पहले दोहे में कवि कहते हैं कि मनुष्य की जाति उसके गुणों से बड़ी नहीं होती है।

दूसरे दोहे में कहते हैं कि अपशब्द के बदले अपशब्द कहना कीचड़ में हाथ डालने जैसा है।

तीसरे दोहे में कवि चंचल मन पर व्यंग करते हैं कि माला और जीभ से प्रभु के नाम जपते हैं पर मन की चंचलता का त्याग नहीं करते हैं।

चौथे दोहे में कहते हैं कि किसी को कमजोर समझकर दबाना नहीं चाहिए क्योंकि कभी-कभी यही हमारे लिए कष्टकारी हो जाता है।

पाँचवे दोहे का भाव यह हैं कि मनुष्य अपनी मानसिक कमजोरियों को दूर करके संसार को खुशहाल और दयावान बना सकता है।

1. जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान।

साधु: साधू या सज्जन
ज्ञान: जानकारी
मोल: खरीदना
तरवार: तलवार
रहन: रहने
म्यान: जिसमे तलवार रखीं जाती है

व्याख्या – इसमें कबीरदास जी कहते हैं कि हमें सज्जन पुरुष से उसकी जाति नहीं पूछनी चाहिए अपितु उसका ज्ञान देखना चाहिए अर्थात मनुष्य को उसकी जाति के आधार पर नहीं उसके ज्ञान के आधार पर परखना चाहिए क्योंकि जब हम तलवार खरीदने जाते हैं तो उसकी कीमत म्यान देखकर नहीं लगाते हैं।

2. आवत गारी एक है, उलटत होइ अनेक।
कह कबीर नहिं उलटिए, वही एक की एक।

आवत: आते हुए
गारी: गाली
उलटत: पलटकर
होइ: होती
अनेक: बहुत सारी

व्याख्या – इसमें कबीरदास जी कहते हैं कि जब हमें कोई गाली देता है तब वह एक होती है पर हम पलटकर उसे भी देते हैं तो वो बढ़ते-बढ़ते अनेक हो जाती है इसलिए जब हम उसकी एक गाली पर ही ध्यान नहीं देंगे तो वह वहीं ख़त्म हो जाएगी अर्थात वह एक की एक ही रह जाएगी।

3.माला तो कर में फिरै,जीभि फिरै मुख माँहि।

मनुवाँ तो दहुँदिसि फिरै,यह तौ सुमिरन नाहिं।

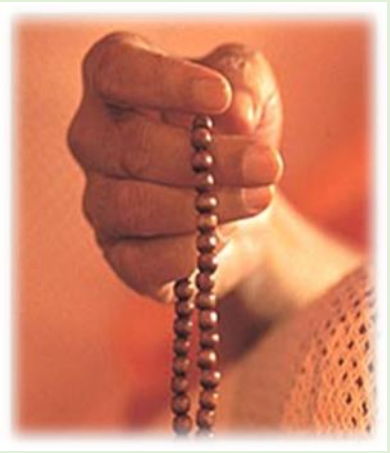

माला तो कर: हाथ,फिरै: घूमना,जीभि: जीभ,मुख: मुँह

माँहि: में

मनुवाँ: मन

दहुँ: दसों

दिसि: दिशा

तौ: तो

सुमिरन: स्मरण

व्याख्या – इसमें कबीरदास जी कहते हैं कि माला को हाथ में लेकर मनुष्य मन को घुमाता है जीभ मुख के अंदर घूमती रहती है। परन्तु मनुष्य का चंचल मन सभी दिशाओं में घूमता रहता है।मानव मन गतिशील होता है जो बिना विचारे इधर-उधर घूमता रहता है|इस तरह भगवान का नाम जपना, वास्तव में स्मरण नहीं कहलाता।

4. कबीर घास न नींदिए, जो पाऊँ तलि होइ।
उड़ि पड़ै जब आँखि मैं, खरी दुहेली होइ।

नींदिए: निंदा करना
पाऊँ: पाँव
तलि: नीचे
आँखि: आँख
खरी: कठिन
दुहेली: दुःख देने वाली

व्याख्या – इसमें कबीरदास जी कहते हैं कि हमें कभी घास को छोटा समझकर उसे दबाना नहीं चाहिए क्योंकि जब घास का एक छोटा सा तिनका भी आँख में गिर जाता है तो वह बहुत दुख देता है अर्थात छोटा समझकर हमें किसी पर अत्याचार नहीं करना चाहिए।

नोट- यहाँ पर घास दबे-कुचले लोगों का प्रतीक है|

5. जग में बैरी कोइ नहीं, जो मन सीतल होय।
या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।

जग: संसार
बैरी: शत्रु
सीतल: ठंडा/ शांत
आपा: स्वार्थ/घमंड

व्याख्या – इसमें कबीरदास जी कहते हैं कि मनुष्य का मन अगर शांत है तो संसार में कोई शत्रु नहीं हो सकता। यदि सभी मनुष्य स्वार्थ/घमंड का त्याग कर दें तो सभी दयावान बन सकते हैं। अर्थात मनुष्य को अपनी कमजोरियों को दूर करके संसार में प्रेम और दया फैलाना चाहिए।